(आचार्य कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी की ग्रन्थावली के लोर्कापण समारोह में दिनांक 2 नवम्बर, 2019 को
मालवीय सभागृह, लखनऊ विश्व विद्यालय में
मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री पंकज मित्थल जी का सम्बोधन)

राष्ट्रीय संस्कृतिक चेतना के महान साहित्यकार
आचार्य कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह

नमस्कार

कार्यक्रम के अध्यक्ष बन्धुवर न्यायमूर्ति श्री मसूदी जी,

लखनऊ विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो0 एस0 पी0 सिंह जी,

पद्मभूषण श्री नारायण राव भाटी जी,

अन्य विशिष्ट अतिथिगण,

उपस्थित स्नेहीजन एवं

देवियों और सज्जनों।

भारतीय धर्मशास्त्र एवं हिन्दी साहित्य के पुरोधा आचार्य कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी के साहित्य ग्रन्थ के प्रथम खण्ड का आज विमोचन हो रहा है।

मेरा आचार्य से कोई व्यक्तिगत परिचय कभी नहीं रहा और न ही मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे अपने अग्रज न्यायमूर्ति रण विजय सिंह जी के माध्यम से कुँवर साहब के पुत्र शशिप्रकाश सिंह जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके स्वंय के व्यक्तित्व और आचरण देखने भर से मैं समझ सकता हूँ कि कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह कितने सरल, साधारण, कर्तव्यनिष्ठ, धार्मिक व सिद्धांतवादी व्यक्ति रहे होंगे।

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी का जन्म 1910 में सीतापुर जिले में हुआ था। वह जोधपुर एवं बड़ौदा विश्व विद्यालय में हिन्दी विमाग के अध्यक्ष रहे। 1968 से 1970 तक वह भारतीय हिन्दी परिषद के सभापति भी रहे। प्रसिद्ध साहित्यकार बाबू श्याम सुन्दर दास अर्मत लाल नागर व आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उनके समकालीन व अनन्य मित्र थे। आचार्य द्रारा लिखित साहित्य ने उन्हें हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है।

साहित्य मनीषी आचार्य कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह कि साहित्यिक प्रतिभा और वैचारिक उन्मुक्ता उनके साहित्य व पुस्तकों से भली भांति परिलक्षित होती है। उन्होंने "मेघमाला" के गीतों का अनुपम उपहार हिन्दी जगत को देकर गीत रचना के क्षेत्र में नूतन क्रंति का प्रारम्भ किया। उनके नाटक ऐतिहासिक महत्व के हैं जिसमें "तुलसीदास" शीर्ष बिन्दु पर हैं। यह एक विशिष्ट एवं निराली शैली में लिखे गये हैं।

कुछ वर्ष पूर्व अक्टूबर 1910 में आचार्य कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जन्मशती वर्ष समारोह आयोजित किया गया था जिसमें उनके काव्य, महाकाव्य नाटक व सम्पादित ग्रन्थों की समीक्षा की गयी थी। उसी कड़ी में आज उनकी रचनाओं का संग्रह के रूप में 5 खण्डों का ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना के तहत उसका पहला खण्ड आपके बीच प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुँवर जी के दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं पहला "रामदूत" दूसरा "संकटमोचन" है। आचार्य ने अपने महाकाव्य "रामदूत" में हनुमान जी को केन्द्र में रखकर काव्य की रचना की है। उनका महाकाव्य संकटमोचन तो हनुमान पर आधारित है ही।

इन दोनों महाकाव्यों में भगवान श्री राम को केनद्रित कर उनके परम् भक्त हनुमान के गुणों और चरित्र का वर्णन किया गया है। इन दोनों ही महाकाव्यों के नायक हनुमान हैं। इनको पढने भर से कोई भी समझ सकता है कि कुँवर साहब को भगवान श्री राम पर कितनी गहरी आस्था थी और वह हनुमान जी के कितने बड़े भक्त व अनुरागी थे।

बाल्मीकी रामायण में भगवान श्री राम के जितने गुणों का उल्लेख किया गया हैं कुँवर जी के अनुसार वे सब हनुमान चरित्र में भी देखने को मिलते है। अन्तर केवल इतना है कि भगवान राम एक सम्राट के पुत्र हैं और श्री हनुमान एक वनवासी दंपति के। राम विष्णु के अवतार हैं और हनुमान महादेव शिव के। राम शिव के भक्त हैं और शिव राम के परम् भक्त हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ऐसे ही राम और हनुमान भी एक दूसरे के पूरक ही माने जाते हैं।

भगवान राम व भक्त हनुमान जी के गुणों का मिलना स्वाभाविक ही है। भगवान राम भी हनुमान जी को अपने प्रिय अनुज की भांति ही मानते आये। हनुमान चालीसा में ही बाबा तुलसी दास ने राम हनुमान के इस सबंध का वर्णन करते हुए लिखा हैः—

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

मान्यता यह भी है कि हनुमान जी का जन्म उनकी माँ अंजनी के द्वारा वही दिव्य खीर खाने से हुआ था जो महाराजा दशरथ को पुत्रयेष्टी यज्ञ से प्राप्त हुई थी और जिसका पान उनकी तीनों रानियों ने किया था जिसके फलस्वरूप राम, भरत, लक्ष्मण व शत्रुघन ने जन्म लिया था।

कुँवर जी ने अपनी दोनों रचनाओं में भगवान के गुणों के अलावा हनुमान जी के दो विशेष गुणों का उजागर करते हैं। वह है शक्ति और भक्ति। हनुमान जी की शक्ति कई प्रकरणों में जहाँ वह राक्षसों का वध व लंका का दहन करते हैं और युद्ध क्षेत्र में

देखने को मिलती है।

आचार्य ने हनुमान जी की भक्ति के सबंध में लिखा है कि सांयकाल राम रावण युद्ध समाप्त हो जाने पर वह समुद्र तट पर जाकर भगवान राम के ध्यान में लीन हो जाते थे।

इसके अलावा हनुमान जी के एक विशेष गुण का और वर्णन हमें कुँवर जी के महाकाव्यों में मिलता है और है उनकी सेवावृत्ति।

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने अपने महाकाव्य में हनुमान जी की सहज सेवा वृत्ति का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है वे बताते हैं कि विश्राम के समय हनुमान जी अर्धरात्रि में युद्धभूमि में आते हैं जहाँ क्षतविक्षिप्त सैनिक क्रंदन कर रहे होते हैं वह उन्हें जल पिलाकर उनके घावों का स्पर्श कर शीतल औषधि का लेप कर उनके कानों में राम नाम का मंत्र फूंकते हैं। उनका इस प्रकार विचरण करना उनकी कृपा, दया व करूणा को दर्शाता है।

कुंवर साहब राष्ट्र गौरव के कवि थे और उनकी लेखनी से राष्ट्रवादी चेतना का ही संचारण होता था। भारत की राष्ट्रीय नीति के सम्बन्ध में उनकी सोच एक दृष्टांत से उजागर होती है।

लंका विजय के पश्चात वहाँ की शासन व्यवस्था का प्रश्न उठता है। भगवान राम वहाँ का साम्राज्य ग्रहण करने के अनुरोध को ठुकराते हुए कहते हैं "किसी की धरती का अधिग्रहण करना हमारी राष्ट्रीय नीति नहीं है। हम जिस धरती पर विजय प्राप्त करते हैं उस पर आदर्शों का आलोक उतारते हैं, उसको आर्यतत्व दान में देते हैं"। आचार्य का यह मत जो उनके महाकाव्यों में दिखता है आज के युग में अत्यन्त ही सार्थक है।

आर्चाय लिखते हैं वन से लौटने के पश्चात जब राम का राजा के रूप में अभिषेक हो जाता है तब माँ कौशल्या राम से कहती हैं तुम्हारे विजय और सफलता का श्रेय हनुमान को जाता है। लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा भी उन्होंने की है। रधुवंश कभी उनके ऋणों को नहीं चुका सकता। अतः तुम चलकर हनुमान जी की माता के दर्शन करो और अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन करो। माता जी की आज्ञा पाकर भगवान राम सपरिवार अंजनी देवी तथा केसरी के दर्शन करते हैं और अपना आभार प्रकट करते हैं।

उक्त दोनों महाकाव्य रामकथा से सम्बन्धित हैं तथापि इनमें राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का स्वर प्रमुख है।

भगवान श्री राम व हनुमान पर इतना सब लिखने के पीछे भी आचार्य के मन में अवश्य ही यह रहा होगा कि अगर सभी भारतवासी उनके स्वरूप का अनुसरण करेंगे

तो सही मायने में राम राज्य की स्थापना होगी और हम एक उत्तम समाज स्थापित करने में सफल होंगे।

कुँवर साहब राम और हनुमान के अनन्य भक्त थे। वह घंटों राम की उपासना करते थे और राम कथा का अध्यन और मनन उनकी दिनचर्या थी। रामदूत महाकाव्य में भारतीय संस्कृति और दर्शन शास्त्र का भव्यरूप रामप्रेमी और उपासकों को मिलता है।

संकटमोचन के माध्यम से कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी ने पूरी रामायण की कथा खड़ी बोली में कहने का प्रयास किया है और मारूत नंदन के कर्तव्यनिष्ठ चरित्र को उद्देश्यपूर्ण तरीके से जनमानस के बीच प्रस्तुत किया है।

आचार्य के यह दोनों महाकाव्य बाल्मीकी रामायण और तुलसी के रामचरित मानस को सम्पूर्णता प्रदान करते हैं और हिन्दी साहित्य को परम ऊँचाई पर ले जाते हैं।

मैं उनको शत् शत् नमन करता हूँ और आज के कार्यक्रम के आयोजकों को उनके प्रयास पर धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

जय हिन्द जय भारत